

Krishi Vigyan Kendra-II, Sitapur
Uttar Pradesh

Revival of Groundnut in Sitapur and Adjoining Districts of U.P

Technological Support- ICAR- Directorate of Groundnut Research
Junagadh Gujarat

ICAR- Agricultural Technology Application Research Institute, Kanpur

Ready for transferable technology

KVK-II, Katia, Sitapur

Name of technology:

Groundnut intercropping in spring planted sugarcane

Year- 2019-20

Character of technology:

It is helpful to farmers towards DFI

Scientist- Shailendra Kumar Singh
(Nodal Scientist of Groundnut Revival and AICRP-G)

Impact of the technology:

KVK assessed various technological interventions for further enhancement of the income of sugarcane farmers. From the results of our trials, the intercropping of summer groundnut in spring planted sugarcane showed the potential to increase the income of farmers substantially by generating extra income per unit of land and inputs utilized. The intercropping of groundnut with spring planted sugarcane was found to be very effective for the improvement in the level of nutrients in the soil thus augment of soil fertility as groundnut belongs to the leguminosae family.

District Sitapur having high potential of Banana cultivation and from past 5 years the area is increasing day by day and now reached up to 3000 Ha

currently. For intervention in Kharif season, KVK-II, Sitapur taken also initiatives on intercropping of groundnut with banana in the year 2017-18 and the results was very encouraging.

The summer groundnut (Variety.T.G.37-A) were sown in February-march in single and paired row model between trench planted sugarcane (variety- Co-BOSI-435) 3x3. It was recorded that yield of groundnut with single row planted method was 17.5 to 19.25q/ Ha while with paired row planted method it was recorded 20.60 to 22.75q/ Ha. The yield of sugarcane with single row planted groundnut was recorded 111 to 112.4t/ha. While with paired row planted groundnut the sugarcane yield was found to be 112 to 112.6t/Ha.

The total expenditure from sowing to harvesting of sugarcane is approximately 25-30 thousand/ acre and with the groundnut intercropping expenditure exceeded approximately Rs.33-34 thousand/acre. With the slight increase in input cost expenses farmers can achieve 7.7 to 9.1 quintal groundnut / acre along with sugarcane. At present, the market price of groundnut is around 5000 rupees per quintal, so if we add the price of 9 quintal groundnut, then it will be 45000 which is more than the total cost of the farmer. So the groundnut is bonus/additional income for farmer.

Remark:

According to the above technology, the total cost spent by the farmer in sugarcane cultivation is recovered in just 110 days.

Technology Show through the action photographs.



Fig-1 Single row model between trenches

(Demonstration field Observed by Dr. Radhakrishnan T. Director and Dr. Ram Dutta Principal Scientist, ICAR- Directorate of Groundnut Research, Junagadh, Gujarat)



Fig-2 Flat bed model



Fig-3 Groundnut intercropping in between Banana (Season-Kharif)



Fig No. 4 Groundnut intercropping in Maize

**Appreciation Letter Issued by ICAR- Directorate of Groundnut Research,
Junagadh, Gujarat**



भातुगलुप-ढूँगफली अनुसंधान निदेशालय

इवनगर रोड, पोस्ट बॉक्स नं 5, जूनागढ 362001, गुजरात, भारत

ICAR-Directorate of Groundnut Research

Ivnagar Road, PO Box No. 5, Junagadh 362001, Gujarat, India



डॉ. राधाकृष्णन, टी
Dr. Radhakrishnan, T
निदेशक
Director

LETTER OF APPRECIATION

The ICAR-DGR Junagadh in collaboration with KVK-II, Sitapur started "Groundnut Revival Program" from spring 2017 at Sitapur District of Uttar Pradesh. The Program was initiated under the leadership of undersigned and was coordinated by Dr. Ram Dutta, PS & Head (Plant Pathology) from this Directorate. Dr. Anand Singh Head & SS, Dr. Shailendra Singh, Scientist & Nodal Incharge of Groundnut Revival, Dr Anand Singh-II, Dr. Daya Shankar Srivastava, Dr. (Mrs.) Saurabh, Dr. Shishir Kant Singh, Dr. Sachin Pratap Tomar and his colleagues from KVK-II, have been instrumental in implementing the program which got acceptance among farmers and all other stakeholders in the district. As on now, from various sources including media reports, the acreage of the groundnut production in the district has increased noticeably. Now, the groundnut seed produced at Sitapur are being supplied, as per demand, to other districts also of Uttar Pradesh. I have personally visited the area several times and satisfied with efforts being put for Groundnut revival and area expansion as sole crop as well as an intercrop with sugarcane. The work done by the team has been appreciable and commendable. I wish them all success in their future endeavors.

(Radhakrishnan T)

09.01.2020

Officers/ Scientists who observed the technology



Fig-6 Technology Observed by Dr. U.S. Gautam, Vice Chancellor, Banda University of Agriculture and Technology, Banda



Fig-7 2nd Visit of Dr. Radhakrishnan T. Director and Dr. Ram Dutta Principal Scientist, ICAR- Directorate of Groundnut Research, Junagadh, Gujarat



Fig-8 Paired Row technology observed by Dr. Sumit Mishra, Joint Director at Ministry of Agriculture & Farmer Welfare. Government of India



Fig-9 Technology Observed by Chinese officers Mr Zhongju Yang, Director and Mr. Xiao Zhang, Managing Director, Longping india seed R&D centre private limited



Fig-10 Dr. Akhilanand, District Agriculture Officer, Sitapur, Uttar Pradesh



Fig-11 Dr. Ramjeet, Soil Conservation Officer, Sitapur, Uttar Pradesh

संवाददाता । सीतापुर

खाद्य तेलों में आधुनिकता प्राप्त करने हेतु समूह अंशिक सैंक प्रदर्शन एक सप्ताह प्रवेश हैं। समूह अंश प्रदर्शन योजना एक सप्ताह डालते हुए कार्यक्रम प्रवर्ती, प्रमुख वैज्ञानिक प्रकल्प (सिंघे ने बताया कि तिलहन की फसलों को उत्पादन एवं उपपदवस्तु बढ़ाते हुए भारत सरकार द्वारा मिलने वाले मोटो में नेशनल मिशन ऑन फूड सिक्योरिटी अंश अंश पैक अनारग (वित्तिक कार्यक्रम) कुछ प्रमुख देशों के साथ संबंधित किया जा रहा है। वित्तिक को प्रदेस में मांग को सुधित रखते हुए इसमें आधुनिकता प्राप्त करना, क्षेत्र

[illegible]

संवादसत्र, सीतापर : कृषि विज्ञान



विज्ञानों को समग्र पर सुविष्टिचा बाजार व तकनीकी ज्ञान मिल जाय तो आज हमारा किसान अपनी जमीन का अधिक से अधिक उपयोग कर एक ही खेत में मिश्रित शैली करते ज़्यादा से ज़्यादा लाभ कमाने की इच्छा रखता है। प्रसार वैज्ञानिक शैलेंद्र सिंह ने बताया कि जलजलधायी हमने जिन-जिन गांव में पर्यटन लाया था, वो गांव आज खरीफ में मृंगफली गांव का रूप ले चुके हैं। समग्रसा गांव में पांच किसानों ने साढ़े पांच एकड़ में मृंगफली की बुवाई की थी, अब बाब 12.5 एकड़ फसल तैयार करने की जा रही है। जुनामढ़ में मृंगफली वैज्ञानिक डॉ. आजात ने मृंगफली की बुवाई से लेकर कटाई तक की संपूर्ण सरस-कियाओं पर चर्चा की।

संस्था सदस्यता शुल्क : प्रतिवर्षिक

वाराणसी की अपनी पुरानी पहचान
(वाराणसी की छोटी की पुनः वापसी के
पल्लव जगमग अब दिखने लगे हैं।
वाराणसी के कृषि विज्ञान केंद्र कटिया
रा मृगाली अनुसन्धान विद्यालय
वाराणसी के छात्रों की सहयोग

प्राप्त की जा रही परियोजना के
गत जनपद में पहली बार राज्य
स्तर पर आयोजित जलपट्ट में कुल 20
क्षेत्रों को कालाई की गयी
है। जलपट्ट कृषि विभाग के
मार्गदर्शन में आज किसानों के
पर मुहान्ता (हालवा) रही है।
जल में केंद्र ने परियोजना के

कृषि विज्ञान के
राष्ट्र के वैज्ञानिकों
प्रयास लाया रंग
मानों को किया
प्रशिक्षित

प्रदेशीय विद्यार्थियों
मार्ग में मार्ग
संरक्षित की रूप में
है : अत्यंत महत्वपूर्ण
अने देशी अन्तर्गत
विद्यार्थी अन्तर्गत
को अत्यंत महत्वपूर्ण
विद्यार्थी अन्तर्गत

होते हैं। अतः यह प्रमाण है कि अमेरिकी सरकार ने भी कि यह पुष्टि होती है कि वे मूलभूत से उपलब्ध होते हैं। अतः अमेरिकी सरकार यह प्रमाण है कि वे मूलभूत से उपलब्ध होते हैं।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

अमीनों को दुग्ध सलमाई में अम्लता बढ़ा देने के लिए उपयोग करते हैं। अमीन (अम्लकों) दुग्ध को खराब बनाने एवं मक्खी आकर्षित करता है। अमीन को कहा कि कुछ उपयोग करने में होना चाहिए और विशेषकर खाने के बाद उसे कम रासायनिक बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।



एन (गुजरात), प्रकाश
एन), यह विचारों के
एन (गुजरात) के अति
एन, यह विचारों के अति
एन, यह विचारों के अति
एन, यह विचारों के अति

[illegible]

● जायद, खरीफ दोनों सीजन में होगी मूंगफली की खेती

● कृषि वैज्ञानिक ने परियोजना पर शुरू किया काम

संवादद्वाना । सीतापुर



विज्ञान केन्द्र कटिया के वरिष्ठ वैज्ञानिक व हेड डा. आनन्द सिंह ने बताया कि जित्ता का भी मृगपंक्ती की खेती व उसकी मिठास के लिए जाना जाता था। जनपद में मृगपंक्ती का काले बड़ा शेरबन्स हुआ करता था और वह सारी सुविधायें भी उपलब्ध थी जिससे यह खेती फलफूल रही थी। बाजार, व्यापारी, कारखाने सभी उपलब्ध थे और अब भी है पर समय के साथ-साथ मृगपंक्ती यहाँ से खत्म हो रही गयी। कृषि विभाग केन्द्र, ... ने वैज्ञानिक दाय जनपद के

जुनागढ़ गुजरात के निदेशक राधा, रम्य टो, प्रधान वैज्ञानिक साध दत्ता, व्यापारियों और किसानों के साथ भी बैठक कि गयी। सारी परिस्थितियों पर अध्ययन करने के बाद केन्द्र द्वारा मृंगप्ती अनुसन्धान निदेशालय, जुनागढ़, गुजरात के सहयोग से एक परियोजना के तहत फिर से मृंगप्ती कि खेतों को वापस किसानों के बीच लाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने बताया कि परियोजना के तहत जायद में चयनित कृषकों के साथ एक क्षेत्रफल

लेगा उन्हें और कटी नहीं बेचना है। कं
खरोंफ में दुस खेरापस की उ
अधिकतम बहाने को लपक्य रहेगा। उ



आधुनिक खेती करते हैं तो
किसान को भूमि सुधार के
किसान कि आर्थिक स्थिति

सही अ
सिंह प



निम्नलिखित पर, जो ऊपर
दिए गए चित्रों के आधार पर
पर, जो दायाँ से

किसानों, मिलों, व्यापारियों, मजदूरों के लिए अच्छा खबर है। सब कुछ एक रहा तो एक बार फिर जिले में पूर्णपत्नी की फसल लहलहाएगी। पूर्णपत्नी को खेती को फिर से बढ़ावा देने के लिए इस बार कृषि वैज्ञानिकों

ने पहल की है। खुरां को बात यह है कि भूगर्भीय को खेती को जलद और खरीक दातो मौजन में कराने को परियोजना पर काम शुरू कर दिया गया है। परियोजना के तहत मंगलवार को लहरपुर ब्लाक के ग्राम

कलताजपुर व नबीनगर में प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रत्येक पर प्रथम पद प्राप्त करने का आयोजन किया गया।
इसमें मृगंफली निदेशिकाएँ गुजरात से प्रधान वैज्ञानिक व हेड फसल सुाखा रामदत्त ने भाग लिया। कृषि पर मृगंफली खूब हुआ करती क्या कारण है। कृषि सारी परिधि कावण होते हुए भी मृगंफली खेतों बंद कर दी गयी साथ ही जनपद के जिलाधिकारी कृषि में मृगंफली अनुसंधान करने

काय कर रहे हैं चूँकि यहाँ पर पहल
जायद में मृगफ़ली कि खेती को न
जाती थी इस लिए क्षेत्रफ़ल कम लि
गया है अब्जी बात यह है कि फस
कटने के बाद कृषि विज्ञान के
उनकी सारी पैदावार को ख़रीद

कहा जाता है मृगपत्नी के दान में 48-50 प्रतिशत वसा और 22-28 प्रतिशत प्रोटीन तथा 30 से 40 प्रतिशत तेल पाया जाता है। मृगपत्नी की खेती करने से भूमि की उर्वरता भी बढ़ती है। यदि किसान मृगपत्नी

जाने वाली सभी क्रीट-रोम
राज्यों आदि के बारे विस्तार में
करते हुए जापद में खेती की
कियाँ की भी बताया। इसमें
निक शैलेन्द सिंह ने योजना की

उन्ने ने सम्यक् क्रिया
प्रकाश लोभर ने
शको को प्रशिक्षण
प्रक्रम का संयोजन
करा है।

सीतापुर बनेगा मूंगफली बीज केंद्र

निदेशागुर (ब्यूरो)। मृगफलकी अनुसंधान निदेशागुर के निदेशक डॉ. राधाकृष्णन टी एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राम दास ने कृषक प्रेषी को अवलोकन किया।

यह गुराणु के कटु कटिया एवं भारतीय मृगनुसंधान विभाग के मृगफलकी अनुसंधान निदेशागुर जगन्नाथ गुजरत के मुख्यतः लालमेल से 20 एकड़ क्षेत्रफल में आम फल दालम मृगफलकी लगाई गई। इस दौरान उन्होंने किसानों से उनके अनुभव बांट कर मृगफलकी तकनीकी बुलंदिया का विमोचन किया। डॉ. राधाकृष्णन टी ने बताया कि मृगफलका एवं कम समय उत्पादित उपजत अधिक लाभ देने वाली फसल है। मृगफलकी लगाने से खेत में जीव चक्की को मित्र जीवों की संख्या में वृद्धि होती है। डॉ. राम दास ने बताया कि समेकित नाशीजीव प्रबंधन विधियों से फसल में होने वाली नुकसान से बहुत आसानी से बचा जा सकता है। समसागुर, मृगफलकी एवं मृगनुसंधान विभाग के निदेशक डॉ. राधाकृष्णन टी एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राम दास ने कृषक प्रेषी को अवलोकन किया।

परमपूजा प्राप्त लगाने से महीन रस चुसने से कीर्तों का प्रबंधन बिना दवा के बड़ी आसानी से हो जाता है। माम कुलजगन्पूर के राजकुमार बताया कि हमने यही मैं जब से परमात्मन लगाना है, तब से कीर्त पंखों से होने रस नुकसान में कीं आई है। बहरवा के दीपक ब्रह्म के कि मैने समय समय पर कृपि कि केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह से पोषक तत्व सिंथाई प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया, फलस्वरूप मैं प्रति घंटे 40-42 फुलिया बरस से लगेला है कि मृगफली की खेती में इस सर्वश्रेष्ठ उत्पादन हो रहा। चरित वैज्ञानिक आनंद सिंह ने बताया कि आने वाले छह मृगफली का रचना और बड़े दिनेस खरी कृषक स्वयं भी अपने दूसरे किसानों को उपलब्ध करा कर क्षेत्रफल विस्तार करेंगे।

मंगफली की फसल देखते कृषि वै

साथ अतिरिक्त उत्पादन कर मुद्रा में भी सुधार किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र कटिया एवं भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के मृगफली अनुसंधान निदेशालय जुनागढ़ गुजरात के संयुक्त तत्त्वाधान में मृगफली के पुनरुत्थान

नवाया गया है। इसी क्रम में अनुसन्धान निदेशालय के डा० राधाकृष्णन टी एवं मयदा प्रधान वैज्ञानिक ने में दो दिनों तक कृषक का अवलोकन कर किसानों अनुभवों पर चर्चाएं की हैं। जलवायु परिवर्तन का

कृषक स्वयं भी
सानो को बीज
खेतफर विस्तार
ने चला रहे प्रसार
संह ने निदेशक व
समक्ष अब तक
ए व आने वाले
का प्रस्तुतीकरण

Recognize as voluntary center of All India Coordinated Research Project on Groundnut (AICRP-G)



भाकृअनुप-मूँगफली अनुसंधान निदेशालय
इवनगर रोड, पोस्ट बॉक्स नं 5, जूनागढ़ 362001, गुजरात, भारत
ICAR-Directorate of Groundnut Research

Ivnagar Road, PO Box No. 5, Junagadh 362001, Gujarat, India



डॉ. राधाकृष्णन, टी
Dr. Radhakrishnan, T
निदेशक
Director

F. No. DGR/AICRP-G/Voluntary Centre/2020

09.11.2020

To,
Dr. Anand Singh,
Head, Krishi Vigyan Kendra
Sitapur 2, Village: Katiya
PO: Ulra, Manpur, Block: Biswan
Dist: Sitapur, Uttar Pradesh
Email:

Sub: Recognition of KVK Sitapur 2 as Voluntary Centre for conducting trials of AICRP-Groundnut

Sir,
Greetings from ICAR-DGR, Junagadh.

Please recall our discussion over phone regarding recognizing KVK, Sitapur 2, as a 'voluntary centre' of the AICRP on Groundnut for conducting trials (both varietal and agronomic) of AICRP-Groundnut starting from rabi-summer 2020-21. Sitapur being one of the important areas for irrigated groundnut cultivation in Uttar Pradesh, to spread and popularize groundnut in that region it is pertinent to have a voluntary centre of AICRP-Groundnut. Therefore, it has been decided to recognize your KVK as voluntary centre of AICRP-Groundnut forthwith. Accordingly, trials will be allotted to your centre during rabi-summer 2020-21 on acceptance our offer. Need based financial support, as per norms, will be provided for conducting trials.

I shall be grateful if you kindly accept our offer and conduct AICRP-Groundnut trials on rabi-summer groundnut. Please communicate the details of contact person for future correspondence along with email, telephone and fax numbers.

Thanking you,
Yours faithfully,

(Radhakrishnan T.)

AICRP Trials Report-2021

Center Name- Krishi Vigan Kendra-II, Katia, Sitapur, U.P-261145

Year/Season- Kharif 2021

Trial Name- Advanced Varietal Trials (Varginia)

Conversine factor

Plot Size- 4.7 X 2.25

Spacing- 45 X 15

Sl.No	Entry / Variety	Rep.	IPS/net plot	FPS/Net plot	Dry pod yield (gm/Net plot)	Shellin g %	Kernal yield (gm/Net plot)	Dry haulm yield (gm/Net plot)
1	AVK-2021-1	R-I	149	147	1850	69.0	1280	5600
		R-II	151	149	1970	71.0	1300	5400
		R-III	148	146	2050	70.6	1460	5890
		R-IV	150	149	2100	72.0	1480	5860
		R-V	152	148	2210	69.6	1500	6010
2	AVK-2021-2	R-I	151	149	1980	72.0	1280	6140
		R-II	150	147	2110	70.6	1570	5860
		R-III	153	151	2140	69.6	1600	6140
		R-IV	146	145	1960	71.0	1460	6130
		R-V	149	148	2120	68.0	1490	5780
3	AVK-2021-3	R-I	152	150	2280	70.0	1570	5800
		R-II	148	146	2124	68.7	1420	5670
		R-III	151	149	2221	71.0	1450	5580
		R-IV	150	146	2184	68.7	1490	6050
		R-V	146	145	2215	72.0	1510	6017
4	AVK-2021-4	R-I	147	146	2280	68.0	1540	6240
		R-II	153	150	2170	70.0	1460	5700
		R-III	151	150	2310	69.8	1590	5820
		R-IV	148	147	2121	72.0	1480	5940
		R-V	149	148	2240	71.0	1510	5960
5	AVK-2021-5	R-I	152	151	2290	73.0	1485	6100
		R-II	151	150	2170	70.0	1495	6120
		R-III	147	146	2250	69.6	1505	5968
		R-IV	150	148	1990	71.0	1390	5830
		R-V	150	149	2160	68.7	1450	6240

Center Name- Krishi Vigan Kendra-II, Katia, Sitapur, U.P-261145

Year/Season- Kharif 2021

Trial Name- Initial Varietal Trials, Stage-I (Varginia)

Conversion factor-

Plot Size-

Gross (5.0X2.25)

Net (4.7 X 1.35)

Spacing- 45X15 cm

Sl.No	Entry / Variety	Rep.	IPS/net plot	FPS/Net plot	Dry pod yield (gm/Net plot)	Shelling %	Kernal yield (gm/Net plot)	Dry haulm yield (gm/Net plot)
1	IVK-I,2021-1	R-I	90	88	1110	61.0	664	3150
		R-II	91	88	1215	62.0	746	3510
		R-III	89	87	1400	62.0	940	4800
		R-IV	86	84	1350	63.0	880	4150
2	IVK-I,2021-4	R-I	85	83	1450	65.0	980	4450
		R-II	87	85	1300	65.0	900	3240
		R-III	89	87	1450	65.0	1007	4800
		R-IV	91	88	1560	66.0	1050	5400
3	IVK-I,2021-6	R-I	90	89	1150	61.0	679	2850
		R-II	87	85	1060	65.0	685	2410
		R-III	86	83	1310	65.0	886	4010
		R-IV	91	89	1360	62.5	869	5120
4	IVK-I,2021-7	R-I	88	86	950	64.5	645	3480
		R-II	87	85	920	61.0	538	2750
		R-III	89	87	780	64.0	510	2260
		R-IV	86	84	720	66.0	450	2030
5	IVK-I,2021-9	R-I	87	85	990	62.5	630	2850
		R-II	89	85	1060	62.0	790	3460
		R-III	91	89	1160	68.0	830	3540
		R-IV	88	85	1000	66.0	655	2950
6	IVK-I,2021-11	R-I	87	84	1240	71.0	920	3560
		R-II	89	86	1010	67.0	980	4450
		R-III	90	88	1380	67.0	960	4230
		R-IV	86	84	1140	68.0	810	3510
7	IVK-I,2021-12	R-I	86	84	1080	62.0	680	3480
		R-II	89	87	1000	65.0	608	3450
		R-III	88	85	980	61.0	580	2450
		R-IV	87	85	1160	60.0	671	3580
8	IVK-I,2021-13	R-I	89	87	1160	61.0	684	3540

		R-II	88	85	1010	62.0	620	3210
		R-III	89	87	1080	63.0	731	4320
		R-IV	86	85	840	58.0	507	2180
9	IVK-I,2021-16	R-I	88	86	1560	67.0	1057	4900
		R-II	90	88	1280	67.0	872	3480
		R-III	87	85	1260	68.0	870	3100
		R-IV	89	87	1340	67.0	1008	4200
10	IVK-I,2021-17	R-I	87	85	1400	63.0	1002	4800
		R-II	89	87	1500	63.0	950	4650
		R-III	90	88	1260	62.0	790	3200
		R-IV	86	85	1520	62.0	1020	5300
11	IVK-I,2021-18	R-I	89	87	1350	61.0	680	3750
		R-II	87	86	1120	62.0	784	3800
		R-III	86	84	1280	61.0	670	3100
		R-IV	87	85	1160	63.0	780	4200

Center Name- Krishi Vigan Kendra-II, Katia, Sitapur, U.P-261145

Year/Season- Kharif 2021

Trial Name- Initial Varietal Trials, Stage-I (Spanish)

Conversion factor-

Plot Size-

Gross (5.0X1.5)

Net (4.8 X 0.9)

Spacing-

30X10 cm

Sl.No	Entry / Variety	Rep.	IPS/net plot	FPS/Net plot	Dry pod yield (gm/Net plot)	Shelling %	Kernal yield (gm/Net plot)	Dry haulm yield (gm/Net plot)
1	ISK-I,2021-1	R-I	144	140	1640	69.0	1190	5220
		R-II	135	132	1540	71.0	1100	4950
		R-III	132	129	1620	70.6	1005	5160
		R-IV	141	138	1680	72.0	1205	5240
2	ISK-I,2021-3	R-I	139	135	1590	69.6	1005	4970
		R-II	136	135	1710	65.0	1260	5330
		R-III	135	132	1687	65.0	1210	5260
		R-IV	140	139	1690	66.0	1240	5270
3	ISK-I,2021-4	R-I	139	137	1720	61.0	1290	5360
		R-II	137	135	1750	65.0	1260	5450
		R-III	135	132	1660	65.0	1240	5180
		R-IV	136	134	1640	62.5	1230	5120

4	ISK-I,2021-7	R-I	136	133	1580	64.5	1180	4940
		R-II	138	137	1640	61.0	1280	5120
		R-III	140	138	1630	64.0	1180	5100
		R-IV	141	140	1630	66.0	1120	4980
5	ISK-I,2021-8	R-I	136	135	1760	62.5	1260	5480
		R-II	140	138	1660	62.0	1240	5160
		R-III	138	137	1760	68.0	1210	5450
		R-IV	137	135	1500	66.0	1190	4710
6	ISK-I,2021-11	R-I	141	138	1720	71.0	1300	5350
		R-II	140	137	1780	67.0	1310	5550
		R-III	138	136	1670	67.0	1280	5220
		R-IV	138	135	1660	68.0	1005	5150
7	ISK-I,2021-13	R-I	137	134	1760	62.0	1160	5450
		R-II	135	133	1670	65.0	1210	5240
		R-III	137	135	1590	61.0	1010	5010
		R-IV	140	139	1570	60.0	1005	4850
8	ISK-I,2021-15	R-I	135	134	1630	61.0	1080	5005
		R-II	133	132	1670	62.0	1090	5230
		R-III	136	135	1590	63.0	1010	4950
		R-IV	140	137	1630	58.0	1130	5100
9	ISK-I,2021-16	R-I	136	134	1780	67.0	1240	5560
		R-II	134	133	1580	67.0	1040	4900
		R-III	140	139	1590	68.0	1120	5020
		R-IV	132	130	1670	67.0	1080	5060
10	ISK-I,2021-19	R-I	138	135	1680	63.0	1085	5250
		R-II	135	132	1665	63.0	1070	5200
		R-III	138	136	1760	62.0	1070	5480
		R-IV	134	133	1750	62.0	1090	5450
11	ISK-I,2021-21	R-I	136	134	1630	61.0	1080	5120
		R-II	137	134	1670	62.0	1080	5220
		R-III	141	139	1760	61.0	1110	5500
		R-IV	136	135	1790	63.0	1250	5570
12	ISK-I,2021-27	R-I	134	132	1640	68.0	1060	5120
		R-II	134	133	1670	71.0	1140	5230
		R-III	137	134	1590	68.0	1060	4980
		R-IV	135	134	1750	65.0	1210	5460